संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२३
वर्ष : ३२ अंक : १० (निरंतर अंक : ३६४)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

हमें ८००० से १०००० बोविस ऊर्जा की आवश्यकता है, और अधिक मिले तो यह हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा है। विज्ञानी हैरान हुए कि जो ॐकार का जप करता है उस व्यक्ति के इर्द-गिर्द की और उस व्यक्ति की ऊर्जा ७०००० बोविस और स्वस्तिक की ऊर्जा १० लाख बोविस पायी गयी। - पूज्य बापूजी पढ़ें पृष्ठ २२

Subramanian Swamy
@Swamy39

Asaram Bapu has suffered this bogus case because of three highly placed politicians: Two from Gujarat and one from Italy.

तीन उच्च पदस्थ राजनेताओं के कारण आसाराम बापू को यह फर्जी मामला झेलना पड़ा है : दो गुजरात से और एक इटली से। - प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

सत्संग की क्या महिमा है ? ११

कर्ज-निवारण व धन वृद्धि हेतु विशेष बातें ३३

सात्त्विक आहार के साथ प्रोटीन्स का समृद्ध स्रोत ३०

स्वास्थ्यवर्धक व गर्मी में सभीके लिए लाभदायी पानक ३२

मन नहीं लगता तो क्या करें ? ८

सुखमय जीवन का रहस्य

''बीते हुए समय को याद न करना, भविष्य की चिंता न करना और वर्तमान में प्राप्त सुख-दुःख आदि में सम रहना - ये जीवन्मुक्त पुरुष के लक्षण हैं।''

- पूज्य बापूजी

गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्। वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणाः॥

'बीती हुई बात का शोक नहीं करना चाहिए और न ही भविष्य की चिंता करनी चाहिए। बुद्धिमान लोग वर्तमान काल के अनुसार कार्य में प्रवृत्त होते हैं, जुट जाते हैं।'

समझदार लोग वर्तमान काल में रहते हैं, यही तो उनके सुखमय जीवन का रहस्य है ! आप अपना वर्तमान बिल्कुल ठीक रखें। यदि आपका वर्तमान बिल्कुल ठीक है तो आपका भूत और भविष्य भी एकदम ठीक-ठीक है। वर्तमान ही भूत बनता है। भूत माने विगत - बीता हुआ। इस समय जो वर्तमान क्षण है वही तो आनेवाले क्षण का विगत हो जायेगा। अच्छा, फिर जो वर्तमान क्षण होगा वह अगले क्षण में भूत हो जायेगा। ध्यान में आया ? इस प्रकार यदि आपका वर्तमान क्षण बढ़िया बीतेगा तो आपका बीता हुआ क्षण भी सब-का-सब बढ़िया हो जायेगा। बढ़िया-बढ़िया-बढ़िया-बढ़िया की एक कतार लग जायेगी। यदि आप आगामी क्षण की ओर देखोगे तो भी बढ़िया-बढ़िया-बढ़िया-बढ़िया की पंक्ति लग जायेगी। आगे आनेवाले क्षण को दूसरा कोई रास्ता नहीं है। भावी क्षण का क्या रास्ता है ? जब भविष्य आयेगा तब वर्तमान होकर ही तो आयेगा ! अतः आपके वर्तमान में जो शर्करा (मिठास) है वह आनेवाले भविष्य पर बिल्कुल लिपट जायेगी, आपका भविष्य मीठा (sugar coated) हो जायेगा; कुनैन की गोली भी आपके लिए शक्कर बन जायेगी। यदि आपका वर्तमान चिंतन बिल्कुल सुखमय है तो भूत और भविष्य में दुःख देने का सामर्थ्य ही नहीं रहेगा। यदि आपका वर्तमान बिल्कुल संतोषजनक है, यदि इस समय आपके मन में अपने बारे में कोई ग्लानि नहीं है कि 'पहले मैंने ऐसा क्यों किया ? ऐसा क्यों नहीं किया ?...' और यदि इस समय आपके हृदय में कोई वासना नहीं है कि 'आगे हमको क्या-क्या मिले... क्या-क्या नहीं मिले...' तो आप विश्वास करो कि आपका समस्त जीवनकाल अत्यंत सुख-शांति से व्यतीत होगा।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३२ अंक : १० मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३६४
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२३
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
चैत्र-वैशाख वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स'** (Hari Om Man ufactur er es) **के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु (०७९) ६१२१०७४२

९५१२०८१०८१ 'RishiPrasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ वसुधैव कुटुम्बकम् ❊ पृथ्वी के देव हैं सेवाभावी ईमानदार शिष्य ! ४
❖ एकादशी माहात्म्य
❊ मेरु पर्वत तुल्य महापापों को नष्ट करनेवाला व्रत ५
❖ इन आठ पुष्पों से भगवान तुरंत प्रसन्न होते हैं ७
❖ साधना प्रकाश ❊ मन नहीं लगता तो क्या करें ? ८
❖ सेवा-अमृत ❊ जितनी निष्कामता उतना आनंद १०
❖ संत-दर्शन व सत्संग के २ अक्षर कहाँ से कहाँ पहुँचा देते हैं ! ११
❖ वे जीते-जी मृतक समान हैं १३
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग
❊ ऐसे सुहृद कि पग-पग पर हैं सँभालते, ऊँचा हमें उठाते १४
❖ इसका फल है भारी-से-भारी ! १५
❖ हलकी आदतें निकालने में है बहादुरी १६
❖ सेवा संजीवनी
❊ गुरुसेवा की बलिहारी, दूर हो गयी बीमारी - मुक्ता सरकार १७
❖ विद्यार्थी संस्कार
❊ शीलवान व्यक्ति के लिए कुछ भी असम्भव नहीं १८
❊ इन सात गुणों से सम्पन्न विद्यार्थी छू लेगा बुलंदियाँ १९
❖ महिला उत्थान ❊ आपकी वास्तविक शोभा किसमें है ? २०
❖ संस्कृति विज्ञान ❊ स्वस्तिक का महत्त्व क्यों ? २२
❖ आंतर आलोक ❊ निर्मल वैराग्य का स्वरूप २३
❖ उनको छू के आनेवाली हवा भी कल्याण कर देती है २४
❖ प्रसंग माधुरी ❊ चलता पुरजा चलता ही रहेगा २५
❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
❖ भजनामृत ❊ भूले हुए को राह दिखाते रहना - संत पथिकजी २६
❖ जीवन जीने की कला ❊ योगासन की जीवन में उपयोगिता २७
❖ शास्त्र दर्पण ❊ ईश्वर की आदि नियति को स्वीकार कर... २८
❖ भक्तों के अनुभव
❊ चरणरज से मेरा जीवन ही बदल गया - विष्णु लखवानी २९
❖ शरीर स्वास्थ्य
❊ विभिन्न दालों के गुण-दोष, उनकी उपयोग-विधि व उपयोगिता ३०
❊ स्वास्थ्यवर्धक व गर्मी में सभीके लिए लाभदायी पानक ३२
❖ अनमोल कुंजियाँ
❊ कर्ज-निवारण व धन-वृद्धि हेतु रखें इन बातों का विशेष ध्यान ३३
❖ मंगलमय संदेश ❊ ईश्वर का संबंध और सत्य का आश्रय ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV – बात सिर्फ खबर की
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी
Asharamji Bapu | Asharamji Ashram | Mangalmay Digital
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु)
Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

पृथ्वी के देव हैं सेवाभावी ईमानदार शिष्य !

– पूज्य बापूजी

सत्संग से हमें वह रास्ता मिलता है जिससे हमारा तो उद्धार हो जाता है, हमारी २१ पीढ़ियाँ भी तर जाती हैं।

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग॥
(श्री रामचरित. उ.कां. : ६१)

जहाँ ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का सत्संग मिलता हो ऐसी जगह पर जाते हैं तो एक-एक पग चलने से एक-एक यज्ञ करने का फल मिलता है।

महान बनने के तीन सोपान हैं : वेदांत का सत्संग, उत्साह और श्रद्धा। ये अगर छोटे-से-छोटे व्यक्ति में भी हों तो वह बड़े-से-बड़ा कार्य कर सकता है। वे लोग धनभागी हैं जिनको ब्रह्मज्ञान का सत्संग मिलता है। वे लोग विशेष धनभागी हैं जो दूसरों को सत्संग दिलाने की सेवा करके संत और समाज के बीच की कड़ी बनने का अवसर खोज लेते हैं, पा लेते हैं और अपना जीवन धन्य कर लेते हैं।

एक पृथ्वी के देव होते हैं। दूसरे स्वर्ग के देव होते हैं। स्वर्ग के देव तो अपना पुण्य खर्च करके मजा लेते हैं। पृथ्वी के देव हैं 'ईमानदार शिष्य'। सद्गुरु और भगवान के दैवी कार्यों में अपने तन, मन और जीवन को लगानेवाला शिष्य पृथ्वी का देव माना गया है। स्वर्ग का देव तो अपना पुण्य-नाश करके मजा लेता है मगर यह पृथ्वी का देव अपना पाप-नाश करके भगवान का रस पाता है। जो भगवद्भक्ति करते हैं, कराते हैं तथा उसमें जो सहायक होते हैं, हरिरस बाँटने में जो सहायक होते हैं वे बड़े पुण्यशील हैं।

जीवात्मा की भूख मिटाने के सदावर्त

मानो किसी व्यक्ति ने सदावर्त (अन्नक्षेत्र) खोला है। जिसमें कोई भी आये – साधु-संत, गरीब, भूखा, अतिथि – वह टुकड़ा खाये, उसे सदावर्त कहते हैं। अगर कोई व्यक्ति उस सदावर्त में २ मन[1] गेहूँ भेजेगा तो उसे पाप होगा या पुण्य ? २ मन चावल भेजेगा तो क्या होगा ? दाल भेजेगा तो ? पुण्य ही होगा। अरे ! दाल-चावल को छोड़ो, एक सेर[2] इमली, नमक भेजेगा तो भी पुण्य ही होगा क्योंकि सदावर्त में भेजा है, जो भी आयेगा वह खायेगा। शरीर की भूख और प्यास रोटी-पानी की है मगर जीवात्मा की भूख रोटी की नहीं है, परमात्मप्राप्ति की है। जब तक परमात्मप्राप्ति की भूख नहीं मिटी तब तक जीवात्मा चौरासी लाख योनियों में भटकता रहेगा। सदावर्त में भोजन करनेवाले की चार घंटे की भूख मिटती है तब भी नमक, इमली, चावल या घी भेजनेवाले को पुण्य होता है तो जो लोग जीवात्मा की अनंत जन्मों की भूख मिटाने के सदावर्त की सेवा में सहभागी हो जाते हैं उनके पुण्यों की गणना करने में कौन

१. एक मन = ४० सेर अर्थात् करीब ३७ किलो
२. एक सेर = लगभग ९३३ ग्राम

संत-दर्शन व सत्संग के २ अक्षर कहाँ से कहाँ पहुँचा देते हैं ! - पूज्य बापूजी

क्षीरसागर में भगवान विष्णु शयन कर रहे थे । नारदजी आये, बोले : ''भगवान ! कभी तो आप योगनिद्रा में, ब्रह्मरस में होते हो और योगनिद्रा से उठते हो तो सत्संग में । योगनिद्रा में तो चलो आप स्व-स्वरूप में, ब्रह्मस्वरूप में मस्त रहते हो परंतु सत्संग से क्या फायदा होता है ?''

भगवान ने कहा : ''नारद ! तूने कीर्तन तो किया पर कीर्तन के बाद जो सत्संग होना चाहिए - सत्य का संग होना चाहिए उसका अभी तेरे को माहात्म्य पता नहीं चला ।''

''तो महाराज ! सत्संग का क्या माहात्म्य है ?''

भगवान ने सोचा, 'मैं बताऊँगा तो सैद्धांतिक व्याख्या हो जायेगी । यह जरा पक्का ग्राहक बने इसलिए इसको प्रायोगिक अनुभव कराओ ।'

भगवान ने कहा : ''बंग देश में एक वटवृक्ष है । उसकी अमुक डाल के कोटर में तोते ने अंडा दिया है । तुम्हारे जाते-जाते अंडा फूटकर उसमें से बच्चा निकल आयेगा । उससे सत्संग की महिमा पूछो ।''

नारदजी गये और उस तोते के बच्चे से पूछा : ''भाई ! सत्संग की क्या महिमा है ?''

'सत्संग' शब्द तोते के बच्चे के कान में पड़ते ही उसकी गर्दन मुड़ गयी और उसका रामनाम सत् हो गया । नारदजी ने देखा कि 'यह तो सत्संग का नाम सुन के ही मर गया !'

नारदजी भगवान के पास गये, बोले : ''भगवान ! वह सत्संग की महिमा क्या सुनाये, 'सत्संग' शब्द कान में पड़ते ही वह तो मर गया !''

भगवान बोले : ''अच्छा, उस वटवृक्ष की दायीं ओर एक अहीर का झोंपड़ा है । उसकी गाय ब्यायी है । उस गाय के बछड़े से पूछो ।''

''महाराज ! अगर तोते के बच्चे जैसा हाल हो जाय तो ?''

''कुछ भी हो जाय तू सत्संग की महिमा का प्रायोगिक अनुभव कर, संदेह मत कर ।''

नारदजी गये, बोले : ''बछड़ा देवता ! सत्संग की महिमा क्या है ?''

इतना सुनते ही बछड़े की आँखें उलट गयीं और वह उस देह से रवाना हो गया ।

नारदजी मन में बोले कि 'यह तो मुसीबत हो गयी !'

वे वापस आये, बोले : ''भगवान ! बछड़े ने तो कुछ सुनाया नहीं परंतु उसका भी स्वर्गवास हो गया ।''

भगवान : ''अच्छा, उसी नगर के राजा के यहाँ बेटे का जन्म हुआ है, उससे जाकर पूछ ।''

नारदजी बोलते हैं : ''नारायण ! नारायण !! तोता मर गया... कोई हरकत नहीं, बछड़ा चला गया... कोई हरकत नहीं परंतु उस राजकुमार से पूछूँ और उसकी आँखें उलट जायें तो महाराज ! मेरे को हथकडी लग जायेगी ।''

''नहीं-नहीं, हिम्मत करो, वह नहीं मरेगा ।''

हलकी आदतें निकालने में है बहादुरी

– पूज्य बापूजी

अपने को देह मानते हैं, देह के नाम को सच्चा मानते हैं और बस उसीमें लगते हैं । और उसीका नाम रहे, कोई ऐसा न कहे कि 'ऐसा नहीं किया, ऐसी जिम्मेदारी नहीं निभायी' इसलिए रगड़े जा रहे हैं ।

जितनी समता ज्यादा और राग-द्वेष कम उतना व्यक्ति ऊँचा । जितना कपट, जितनी वैर लेने की भावना गहरी उतना व्यक्ति हलकट (ओछा, नीच) । वैर लेना, बदला लेना, राग-द्वेष रखना यह हलकट अंतःकरण की निशानी है । तो हलकट अंतःकरण का हलकटपना निकालने में बहादुरी है । ऐसा नहीं कि उसकी आदत पूरी हो । कोई कहे : 'मैं इससे बदला लूँ ।' और आप उसको बदला लेने में सफल बना दो और पूछो : 'अच्छा, अब खुश हुए ?' वह बोले : 'हाँ, खुश हुआ ।' लेकिन उसका वह बदला लेने का हलकटपना तो बढ़ गया ! क्षमा सीखो । वैर भाव मिटाने के लिए क्षमा सीखो । इसीलिए राजे-महाराजे राजपाट छोड़ के भिक्षा लेने जाते और भिक्षा में अपमान हो जाय तो मन को समझाते थे कि 'बेटा ! सह ले, मान-अपमान देह का होता है ।...' ऐसा थोड़े ही है कि रोटी नहीं मिलती थी इसलिए भिक्षा मँगवाते थे राजाओं से । जो राग है, पुजवाने की, वाहवाही की आदत है वह मिटे; द्वेष, बदला लेने की आदत मिटे ।

डाकू अंगुलिमाल महात्मा बुद्ध का शिष्य हो गया और फिर भिक्षा लेने गया तो लोगों ने देखा कि 'इसने तो मेरे चाचा की उँगली काट के गले में पहनी थी... यह तो मेरे भतीजे की हत्या करनेवाला है... यह तो मेरे फलाने का हत्यारा है...' तो लोगों ने मिलकर उसको तो पत्थर-वत्थर मारे, भिक्षा क्या दें ! साधु बन गया तो सिर फोड़ दिया फिर भी अंगुलिमाल कुछ बोला नहीं क्योंकि बुद्ध ने कहा था कि ''सबके प्रति करुणा का भाव रखना और सबका भला चाहना ।''

गुरु की बात मान के भिक्षा के बदले में सिर फुड़वा के आ गया तो भी बड़ा शांत रहा ।

बुद्ध ने पूछा : ''यह क्या हुआ ?''

बोला : ''मैं अंगुलिमाल डाकू था न, तब कइयों की उँगलियाँ काट के माला बना के उसे पहनकर घूमता था । भिक्षा लेने गया तो उन सबने अपना वैर निकालने के लिए मुझे पत्थर मारे तो घायल हो गया ।''

इतना सब होने पर भी अंगुलिमाल शांत था । बुद्ध ने देखा वैर लेने का भाव नहीं है तो बोले : ''तूने तो कई जन्मों का काम अभी निपटा लिया, वाह !''

अंगुलिमाल बोला : ''भंते ! आपकी कृपा है ।''

''मेरी कृपा तो कइयों पर है परंतु तुमने पचा ली ।''

तो वैर निकाले, आलस्य निकाले... अपनी हलकी आदत आप ही निकालेगा तभी उन्नति होगी ।

नहीं तो इतना सत्संग सुना और छुप के फिर फिल्म देखेंगे तो मेरा

स्वस्तिक का महत्त्व क्यों ?

(गतांक का शेष)

स्वस्तिक बनाने की विधि और उसके लाभ

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''स्वस्तिक बनाते समय पश्चिम से पूर्व की तरफ और उत्तर से दक्षिण की तरफ लकीरें खींच के धन का चिह्न इस प्रकार बनाना चाहिए कि उन लकीरों के बिल्कुल मध्य में वे आपस में मिलें । फिर चित्र में दिखाये अनुसार धन चिह्न के आखिरी छोरवाले ४ बिंदुओं से दक्षिणावर्त दिशा में (घड़ी की सूइयों की घूमने की दिशा में, क्लॉकवाइज) चार लकीरें बनायें । कई लोग विपरीत दिशा में (एंटीक्लॉकवाइज) लकीरें बनाते हैं तो फिर विपरीत प्रभाव होता है । स्वस्तिक की प्रत्येक दो भुजाओं के बीच में एक-एक बिंदी लगानी चाहिए और धन के चिह्न के केन्द्रबिंदु में (जहाँ रेखाएँ एक-दूसरे को काटती हैं) एक बिंदी लगानी चाहिए ।

संस्कृति विज्ञान

गोझरण, गंगाजल, कुमकुम, हल्दी और इत्र - इन पाँच चीजों का मिश्रण बनाकर अगर सही ढंग से स्वस्तिक बना दें तो उसका प्रभाव बढ़ जायेगा । स्वस्तिक में दैविक विधान से, और इन पाँच चीजों से वातावरण की ऋणात्मक ऊर्जा को धनात्मक ऊर्जा में बदलने की शक्ति आ जायेगी । वह स्वस्तिक अपने घर की दीवाल पर लगा दीजिये, वास्तुदोष की ऐसी-तैसी । घर में यदि वास्तुदोष है तो किसी संगमरमर के पत्थर पर स्वस्तिक खिंचवा लें । फिर उस स्वस्तिक के ऊपर इस मिश्रण को लगा के उसे घर के कोने में गाड़ दीजिये । वास्तुदोष की समस्या खत्म हो जायेगी । इससे घर के कलह और बीमारियाँ दूर भगाने में भी मदद मिलेगी ।

आप साधना के स्थान पर ऐसा स्वस्तिक रख के या बनाकर उस पर आसन लगा के भजन-ध्यान करें तो उनमें बरकत आयेगी । आप जिस पलंग पर सोते हैं उसके नीचे ऐसा स्वस्तिक कपड़े पर अथवा फर्श पर, जैसा जिसको अनुकूल पड़े, बना दें । आपको यह ऊर्जादायी स्वस्तिक मदद करेगा । ॐकार का, स्वस्तिक का दर्शन उल्लास और ऊर्जाप्रदायक है ।

डॉ. डायमंड ने गहरे अध्ययन और खोज के बाद कहा कि 'स्वस्तिक को देखने से भी जीवनीशक्ति का विकास होता है ।' हिन्दुओं को धन्यवाद है कि लाखों वर्ष पहले से कोई भी शुभ कर्म करते हैं तो स्वस्तिक चिह्न बनाते हैं । स्वस्तिक के दर्शन से आपकी सात्त्विक आभा (aura) में बढ़ोतरी होती है, मन और प्राण ऊर्ध्वगामी होते हैं और जीवनीशक्ति का विकास होता है ।

स्वस्तिक का इतना महत्त्व क्यों ?

फ्रांस के वैज्ञानिक एंटोनी बोविस ने एक यंत्र (ऊर्जा-मापक यंत्र) बनाया, जिससे वस्तु, वनस्पति, वातावरण, मनुष्य या स्थान की ऊर्जा मापी जा सके । उसका नाम रखा बोविस बायोमीटर (बोविस स्केल) । उस यंत्र ने सामान्य व्यक्ति की ऊर्जा ६५०० बोविस दिखायी । यंत्र ने मनुष्य के चक्रों की ऊर्जा ६५०० बोविस से लेकर

उनको छू के आनेवाली हवा भी कल्याण कर देती है

– पूज्य बापूजी

जिनकी अकाल मृत्यु होती है वे प्रेत हो जाते हैं । एक बुद्धपुरुष – ब्रह्मवेत्ता महापुरुष ने सोचा कि 'मुझे प्रेतों को देखना है ।' वे भूत-प्रेत फँसानेवाले व्यक्ति के पास गये और कहा कि ''तुम्हारे भूत मुझे देखने हैं ।''

उसने कहा : ''बाबाजी ! यह धंधा बहुत खराब है, क्या देखना है ! ये तो बड़े म्लेच्छ होते हैं और आप जैसे संत देखेंगे !''

बोले : ''हमारी साधना पूरी हो गयी; अब हमें कुछ पाना नहीं, कुछ खोना नहीं । हमें तो विनोदमात्र देखना है ।''

उसने कहा : ''बाबाजी ! कितने दिखाऊँ ? मेरे पास कई बँधे हुए हैं । और मेरे पास ऐसे कई मंत्र भी हैं जिनसे मैं सैकड़ों प्रेतों को बुला सकता हूँ ।''

बाबाजी ने कहा : ''२-४ ही दिखा दे, देखूँ कैसे होते हैं ।''

तो उसके पास करीब १०८ छोटे-मोटे भूत थे । उसने पहली विधि की और ४ को बुलाया पर एक भी नहीं आया । फिर उसने कुछ शक्तिशाली विधि की और ८ को बुलाया । अब भी कोई नहीं आया । शाम हुई, बाबाजी ने कहा : ''क्या तू भूत-वूत करता है, है तो कुछ नहीं !''

बोला : ''बाबाजी ! क्या पता कहाँ चले गये, मेरा मंत्र खोटा तो नहीं होता है !''

उसने फिर उसके बँधे हुए जितने भी भूत थे, उन सबके नाम लिये और उन्हें बुलाने के विधिवत् प्रयोग किये । रात के १२, १, २, ३ बज गये, कोई नहीं आया ।

संत ने कहा : ''प्रभात हुई, अब हम अपने-आपमें डूबने को जा रहे हैं । देख लिया, तेरा भूत तो नहीं मिला, अब हम अपने-आपको देखेंगे ।''

संत वहाँ से चल दिये और वह भूत-प्रेतवाला सिर कूटता रहा । संत कुछ आगे निकल गये तब एक लँगड़ा भूत उस भूत बाँधनेवाले व्यक्ति को दिखा । वह बोला : ''तू अभी आया है ससुर ! और कहाँ मर गये ? मेरी इज्जत का सवाल था !''

कर्मी-धर्मी, यशस्वी-तपस्वी की इज्जत का सवाल होता है किंतु ब्रह्मवेत्ता की इज्जत का कभी कोई सवाल ही नहीं होता है । वे महापुरुष अपने स्वतंत्र स्वामी होते हैं क्योंकि वे प्रकृति में नहीं जीते, अपने शुद्ध स्वरूप में जीते हैं ।

जब भूत से पूछा गया कि और कहाँ गये तो उसने कहा : ''और तो सब हट्टे-कट्टे थे; जिन-जिनको तुम बुलाते गये वे सब तुम्हारे पास आये ।''

''मेरे पास तो एक भी नहीं आया !''

''सब दौड़ते-दौड़ते आये । मैं दुर्बल और लँगड़ा हूँ अतः सबसे पीछे जरा धीरे-धीरे आया । कोई बाबाजी थे, कोई बुद्धपुरुष थे, उनकी छाया पड़ने से उन सभी भूतों की सद्गति हो गयी । मैं अभागा देर से आया इसलिए वंचित रह गया ।''

मुनि अष्टावक्रजी कहते हैं :

सर्वारम्भेषु निष्कामो...

(अष्टावक्र गीता : १८.६४)

ब्रह्मवेत्ता महापुरुष बड़े-से-बड़े

जीवन झाँकी पुस्तक

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

इसमें आप पायेंगे : ❊ पूज्य बापूजी के प्रेरणादायी जीवन की प्रमुख घटनाओं का संकलन ❊ आश्रम द्वारा संचालित विभिन्न सत्प्रवृत्तियों की विस्तृत जानकारी । ₹४

बल-स्फूर्तिदायी, एंटी ऑक्सीडेंट, इम्यूनिटी बूस्टर, विटामिन B12 वर्धक संजीवनी रस

❊ गोझरण से निर्मित संजीवनी रस सुमधुर, सुगंधित पेय है । ❊ १ लीटर यह रस करीब ९ **मि.ग्रा. सोना** और ५ **मि.ग्रा. चाँदी** प्रदान करता है, जो शरीर के निर्माण, मस्तिष्क-पोषण और **बुद्धि बढ़ाने** में मदद करते हैं । ❊ यह B12 सहित 'B ग्रुप' के अन्य विटामिन्स एवं कैल्शियम, आयरन, पोटैशियम आदि खनिजों का उत्तम स्रोत है । ❊ इसमें निहित शिलाजीत ह्यूमिक एसिड और फुल्विक एसिड का उत्तम स्रोत है, जो विषनाशक, एंटी ऑक्सीडेंट और स्फूर्तिप्रद हैं । ❊ मोटापा, रक्ताल्पता, यकृत-विकार, पथरी, एड्स आदि अनेक समस्याओं से राहत के साथ यह कैंसर, हार्ट ब्लॉकेज, लकवा आदि गम्भीर रोगों से रक्षा में सहायक है । (गर्म पड़े तो सेवन की मात्रा कम करें ।)

शाहाबी खजूर पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

ये वात-पित्तशामक व १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं । प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) से भरपूर हैं । तुरंत शक्ति-स्फूर्तिदायी, रक्त, मांस, वीर्य व कांति वर्धक, कब्जनाशक, हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं । इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं ।

होमियो डायबा केअर

यह मधुमेह (diabetes) के लिए तो संतुलित औषधि है ही, साथ ही यह मधुमेह से होनेवाले रोग, जैसे - बहुमूत्रता, अति प्यास, शारीरिक व मानसिक कमजोरी एवं थकान में अत्यधिक लाभकारी है ।

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी, सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि समस्याओं को दूर करता है । बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है । दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है ।

रक्त शुद्धिकर, पित्तशामक नीम अर्क

यह दाद, खाज, खुजली, कील, मुँहासे तथा पुराने त्वचा-विकारों में अत्यंत लाभदायी है । यह उत्तम कृमिनाशक एवं दाह व पित्त शामक है तथा बालों को झड़ने से रोकता है । पीलिया, रक्ताल्पता, रक्तपित्त, अम्लपित्त (hyperacidity), उलटी, प्रमेह, विसर्प (herpes), रक्तप्रदर, गर्भाशय शोथ, खूनी बवासीर तथा यकृत (liver) व आँखों के रोगों में लाभदायक है ।

सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है । यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है । टालवालों को भी बाल आ जायें यह इसकी खास विशेषता है ।

शीतलता-प्रदायक, स्वास्थ्यवर्धक गुणकारी पेय

लीची पेय : लीची करती है कमजोरी को दूर, शरीर को बनाती है पुष्ट तथा पाचनक्रिया को करती है मजबूत । **सेब पेय :** सेब है उत्तम स्वास्थ्य हेतु पोषण और स्वाद से भरपूर । **अनन्नास पेय :** अनन्नास है रोगप्रतिरोधक क्षमता, पाचनशक्ति तथा नेत्रज्योति वर्धक । **मैंगो ओज :** आम है सप्तधातुवर्धक व उत्तम हृदयपोषक ।

wt. = Net weight

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

महिला उत्थान मंडल ने पूज्य बापूजी की रिहाई को लेकर देशभर में निकालीं संस्कृति रक्षा यात्राएँ व सौंपे ज्ञापन

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st April 2023

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरें हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गाटा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी